

॥ श्रीसुन्दरताण्डव स्तोत्रम् ॥

पतञ्जलिरुवाच

सुवर्णपद्मिनीतटान्तदिव्यहर्म्यवासिने
सुवर्णवाहनप्रियाय सूर्यकोटितेजसे ।
अपर्ण्या विहारिणे फणाधरेन्द्रधारिणे
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ १ ॥

सुतुङ्गभङ्गजङ्घजा सुधाम्शुखण्डमौळये
पतङ्गपङ्कजासुहृत्कृपीटयोनिचक्षुषे ।
भुजङ्गराजमण्डलाय पुण्यशालिबन्धवे
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ २ ॥

चतुर्मुखाननारविन्दवेदगीतभूतये
चतुर्भुजानुजाशरीरशोभमानमूर्तये ।
चतुर्विधार्थदानशौण्डताण्डवस्वरूपिणे
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ३ ॥

शरन्निशाकरप्रकाश मन्दहास मञ्जुला -
धरप्रवालभासमान वक्रमण्डलश्रिये ।

करस्फुरत्कपालमुक्तरक्तविष्णुपालिने
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ४ ॥

सहस्रपुण्डरीकपूजनैक शून्यदर्शनात्
सहस्रनेत्रकल्पितार्चनाच्युताय भक्तितः ।
सहस्रभानुमण्डलप्रकाशचक्रदायिने
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ५ ॥

रसारथाय रम्यपत्रभृद्रथाङ्गपाणये
रसाधरेन्द्रचापशिञ्जिनीकृतानिलाशिने ।
स्वसारथीकृताजनुन्नवेदरूपवाजिने
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ६ ॥

अतिप्रगल्भ वीरभद्रसिंहनादगर्जित
श्रुतिप्रभीतदक्षयाग भोगिनाकसद्मनाम् ।
गतिप्रदाय गर्जिताखिलप्रपञ्चसाक्षिणे
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ७ ॥

मृकण्डसूनु रक्षणावधूतदण्डपाणये
सुगन्धमण्डलस्फुरत्प्रभाजितामृताम्शवे ।

अखण्डभोगसम्पदर्थलोकभावितात्मने

सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ८ ॥

मधुरिपुविधिशक्रमुख्यदेवैरपि नियमार्चितपादपङ्कजाय ।

कनकगिरिशरासनाय तुभ्यं रजतसभापतये नमश्शिवाय ॥ ९ ॥

हालास्यनाथाय महेश्वराय हालाहलालङ्कृतकन्धराय ।

मीनेक्षणायाः पतये शिवाय नमो नमस्सुन्दरताण्डवाय ॥ १० ॥

॥ इति श्रीहालास्यमाहात्म्ये पतञ्जलिकृतं सुन्दरताण्डवस्तोत्रम् ॥

Sri Kamakoti Mandali [srigurupaduka@yahoo.com]